कत्थक नृत्य - रायगढ़ घराना

— डॉ. पं. नंदकिशोर कपोते

कत्थक नृत्य के चार घराने माने जाते हैं। लखनऊ, जयपुर, बनारस और रायगढ़ घराना। जिस प्रकार कत्थक नृत्य का नाम लेते ही पद्मविभूषण पं. बिरजू महाराज जी का नाम सामने आता है, उसी प्रकार कत्थक नृत्य के रायगढ़ घराने का नाम आते ही स्व. राजा चक्रधर सिंह महाराज, स्व. पं. कार्तिकराम, स्व. पं. कल्याण और पं. रामलाल इन महान कलाकारों के नाम उभरकर सामने आते हैं। इन सभी कलाकारों का रायगढ़ घराने में बहुत बड़ा योगदान रहा है।

हाल ही में पुणे में नंदकिशोर कल्चरल सोसायटी कत्थक नृत्य संस्था में रायगढ़ घराने के मशहूर गुरु पं. रामलाल जी पधारे थे। पुणे में वे काफी दिन रहे, उसी दौरान उनसे रायगढ़ घराने के बारे में काफी चर्चा हुई। पं. रामलाल जी ने रायगढ़ घराने का पूरा इतिहास और रायगढ़ घराने की बारीकियां विस्तृत रूप से मुझे बताई तथा रायगढ़ घराने की कुछ खास बंदिशें पं. रामलाल जी ने स्वयं गाकर भी दिखाईं। यह मेरा सौभाग्य है कि इतने बड़े, महान बुजुर्ग गुरु का सान्निध्य मुझे प्राप्त हुआ।

स्व. पं. कार्तिकराम

पं. रामलाल जी के पिताजी स्व. पं. कार्तिकराम जी। पं. कार्तिकराम जी का जन्म 15 अक्तूबर, सन 1910 में भवरमाल गांव में बिलासपुर (छत्तीसगढ़) जिले में हुआ। इनका जन्म कार्तिक मास की पूर्णिमा को हुआ था। इसलिए उनके पिता ने उनका नाम कार्तिकराम रखा। कार्तिकराम के पिता कुंजराम किसान थे, वे कर्मा डण्डा नृत्य (रास नृत्य का एक प्रकार) तथा गम्मत के शौकीन थे। कार्तिकराम जी के

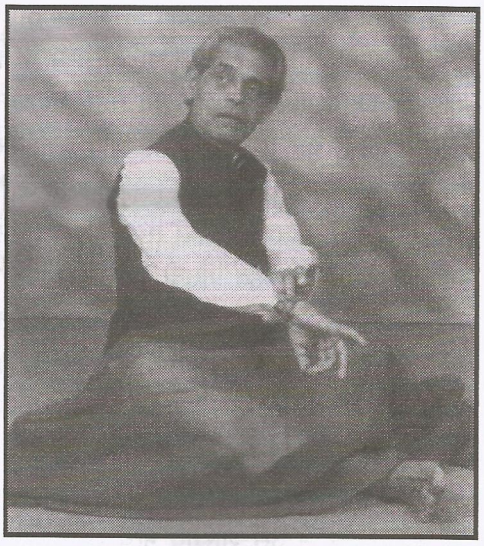

पं. रामलाल

चाचा माखनलाल स्वयं एक लोकप्रिय नर्तक थे, उन्हीं के मण्डली में गम्मत की शिक्षा कार्तिकराम को मिली। कार्तिकराम सात वर्ष की आयु से गम्मत नृत्य का प्रदर्शन छत्तीसगढ़ अंचल में किया करते थे, जिनकी ख्याति छत्तीसगढ़ के दूर-दूर गांव में फैल चुकी थी। गम्मत नृत्य के ताल अंग में अद्धा, डग्गा, चलती तीन लयों का समावेश होता था, जिसमें बारहमासी बारह महीनों का छत्तीसगढ़ी गीत तथा ब्रह्मानंद तुलसीदास, मीरा, कबीर आदि के भजनों का प्रयोग किया जाता था। जिसमें अभिनय के द्वारा भाव प्रदर्शन किया जाता था। यह गम्मत नृत्य रात्री नौ बजे के बाद पूरी रात सुबह चार बजे तक किया जाता था। जिसमें तबला, मंजिरा, चिकारा, हारमोनिअम आदि का प्रयोग होता था। गम्मत नृत्य की शुरुआत पर सर्व प्रथम नगमा बजता था,

तबले पर तीनों लयों में लयकारी बजाकर नृत्य का माहौल बनाया जाता था। तद्उपरान्त नृत्य शुरू किया जाता था। जिसमें आज के कत्थक का कुछ स्वरूप (पद्संचालन, चक्कर और अभिनय इसी रूप में) झलकता था।

एक बार माखनलाल की मण्डली गणेशोत्सव के अवसर पर कार्तिकराम को लेकर रायगढ़ पहुंची। रायगढ़ के राजा चक्रधर सिंह के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में गणेशोत्सव बहुत भव्य रूप से मनाया जाता था। जहां क्षेत्र के अनेकों तरह के नृत्यकार कर्मा, डण्डा, रास, सपरदा, अदिवासी नृत्य तथा देश के शास्त्रीय नर्तक, गायक, वादक भी वहां जाया करते थे। जिनका प्रदर्शन दरबार में हुआ करता था। कार्तिकराम लड़की की वेशभूषा में नृत्य कर रहा था। कार्तिकराम जी का नृत्य चल रहा था तभी महाराज चक्रधर सिंह की नजर उनपर पड़ी। महाराजा प्रतिभा के बहुत पारखी थे, उन्होंने पल भर में बालक कार्तिकराम के अंदर छुपी प्रतिभा को पहचान लिया तथा दर्शक भी नृत्य देखकर बहुत प्रभावित हो रहे थे, तथा चारों तरफ से घेरे लोग आनंद ले रहे थे। राजा चक्रधर सिंह जी ने उनके दल को अपने पास बुलाकर कार्तिकराम की मांग की और महाराज बोले, ''मैं स्वयं कलाकार हूं, इस लड़के की प्रतिभा को देखकर मैं उसे शास्त्रीय नृत्य में पारंगत कर दरबार का रत्न बनाना चाहता हूं। इस लड़के को आप लोग मुझे दें।'' राजा की बात सुनकर मंडली वाले बहुत प्रभावित हुए और कार्तिकराम जी को देने के लिए तैयार हो गए। चाचा माखनलाल व पिता कुंजराम ने भी अपनी स्वीकृति दे दी। महाराज चक्रधर सिंह ने बालक कार्तिकराम को कत्थक नृत्य शिक्षा के लिए गुरु शिवनारायण को सौंप दिया।

महाराज चक्रधर सिंह बहुत गुणी थे और गुणियों को अपने दरबार में बहुत सम्मान देते थे। उनका सदैव यह प्रयास रहता था कि देश के सर्वश्रेष्ठ गायक, वादक, नर्तक उनके दरबार की शोभा के रत्न बनें। राजा चक्रधर सिंह महाराज स्वयं एक अच्छे गायक, वादक, रचनाकार, कवी, कत्थक ज्ञानी थे। उनकी गुणग्राहकता के कारण कुछ समय बाद उनके यहां गुरु जयलाल जी, गुरु नारायण प्रसाद जी, गुरु मोहन लाल जी, गुरु सुंदर प्रसाद जी भी रायगढ़ दरबार पहुंचे। कार्तिकराम जी की नृत्य शिक्षा दिनोंदिन एक से एक उच्च कोटि के गुरुओं के अधीन होने लगी और उनका नृत्य निखरता गया, महाराजा के दरबार की शोभा बढ़ाने लगा।

कुछ दिनों बाद लखनऊ के गुरु अच्छन महाराज जी, सीताराम जी तथा गुरु शंभु महाराज एवं लच्छू महाराज आदि रायगढ़ दरबार पहुंच गए। कार्तिकराम ने उनसे भी नृत्य शिक्षा ग्रहण की। अच्छन महाराज जी से कार्तिकराम ने भाव अंग के साथ-साथ तोड़े और पलटा आदि सीखे। शंभू महाराज जी से उन्हें नृत्य में गति प्रदान हुई तो लच्छू महाराज तथा अल्लादिया से भाव की शिक्षा मिली। कार्तिकराम ने इन सभी गुरुओं से कत्थक की बारीकी, लय, अंग संचालन आदि का ज्ञान प्राप्त किया। उन्होंने पं. जयलाल महाराज से कत्थक के अन्य तालों में भी शिक्षा पाई। उन दिनों में जयपुर लखनऊ दोनों की अलग-अलग घरानों के रूप में पहचान नहीं थी। मतलब कि उस समय तक कत्थक का कोई घराना नहीं था। महाराजा चक्रधर सिंह के आग्रह पर ही गुरुओं ने घरानों के बंधन को स्वीकार किया, जिससे कार्तिकराम को दोनों घरानों के गुरुओं द्वारा गुरु-शिष्य परम्परा के रूप में शिक्षा मिली। इसके अलावा महाराजा चक्रधर सिंह उनके प्रमुख गुरु के रूप में थे ही, उन्होंने ही रायगढ़ कत्थक शैली के ग्रंथ 'मुरजपर्ण पुष्पाकर' की लास्य, नृत्य बंदिशों का ज्ञान कराया, उनकी शिक्षा दी। महाराजा चक्रधर सिंह द्वारा लिखित ठुमरी, गीत, भजन, गजल, खमसा आदि की शिक्षा प्रदान की गई।

.राजा कार्तिकराम की शिक्षा पर विशेष ध्यान देते थे। राजमहल के तालीम कक्ष में सुबह पांच बजे से नौ बजे तक ताल, लय, बोल बंदिशे तथा दोपहर तीन बजे से भाव अंग पर विशेष रियाज करवाया करते थे। रियाज के समय कार्तिकराम दो-दो किलो के शीशे के घुंगरू पहनते थे, जिसमें आवाज नहीं होती थी। इनके रियाज में देश के चोटी के विख्यात तबला वादक मुरजी खां, अहमदजान थिरकवा, उस्ताद कादिर बख्श खां, गुरु जयलाल महाराज, उस्ताद करामत उल्ला आदि तबला संगत पर रियाज में बैठते थे तथा महाराजा चक्रधर सिंह भी स्वयं उपस्थित रहते थे। चूंकि रायगढ़ दरबार में तब सभी विधा के ख्यात नामगुरु एवं उस्तादों का आना-जाना लगा रहता था। दरबार में कार्तिकराम का नृत्य प्रदर्शन देखकर सभी आश्चर्यचकित हो जाते थे।

कार्तिकराम स्वभाव से बहुत ही सीधे, गुरुसेवक एवं आज्ञाकारी थे। रायगढ़ दरबार में देश के सभी विद्वानों का आगमन होता था। उससे उनके माध्यम से कार्तिकराम की ख्याति फैलने लगी। जिसका फल यह हुआ कि उन्हें सन् 1932 से सन् 1962 तक देश के सभी संगीत सम्मेलनों में आमंत्रित किया गया। और सभी म्यूजिक कॉन्फरन्स में उन्हें सम्मान, गोल्ड मैड़ल, रजत पदक, कप, शील्ड, आदि और इन्हें नृत्य प्रोफेसर की उपाधि भी संगीत सम्मेलन में प्रदान की गई। रायगढ़ दरबार में कत्थक नृत्य को देश के गुरुओं और महाराजा चक्रधर सिंह के द्वारा विधिवत् प्रस्तुति हेतु नया स्वरूप देकर विलंबित लय से अति दृतलय तक नृत्य की एक नई पद्धति तैयार की गई। महाराजा चक्रधर सिंह ने कार्तिकराम को एक गांव देकर माल गुजार बना दिया।

पं. रामलाल जी ने कार्तिकराम जी का एक बहुत ही सुंदर किस्सा बताया। एक बार दिल्ली दरबार में जब देश के राजाओं का सेमिनार हुआ था। जिसमें रायगढ़ के महाराजा चक्रधर सिंह कार्तिकराम और कल्याण को अपने साथ ले गए। हूबहू अपने ही जैसी ड्रेस (जिसे किनखाब कहते थे) पहनाकर अपने बराबर बिठाया। जिन्हें देखकर सभी राजा लोग बोले कि क्या ये राजकुमार हैं। राजा चक्रधर सिंह संगीत के शौकिन हैं यह सभी जानते थे, तब सभी ने उनके नृत्य प्रदर्शन के लिए आग्रह किया। कार्तिक - कल्याण का नृत्य प्रदर्शन हुआ, प्रदर्शन देखकर सभी उपस्थित राजा-जन बहुत प्रसन्न हुए। राजाओं में दतिया के महाराज भी थे, उन्होंने राजा चक्रधर सिंह से कार्तिक - कल्याण की मांग की। और राजा चक्रधर सिंह से कहा कि इनकी शिक्षा में जितना भी खर्चा आया है वह हमसे लीजिए। तब महाराज चक्रधरसिंह बोले, कार्तिक - कल्याण मेरे दोनों नेत्र हैं, इन्हें नहीं दे सकता, ये मेरे दरबार के रत्न हैं।

कार्तिकराम जी को 1982 में केंद्रीय संगीत नाटक अकादमी द्वारा राष्ट्रपति ग्यानि झैल सिंह जी के हाथों सम्मान मिला तथा 1983 में मध्य प्रदेश शासन द्वारा भारत भवन के उद्घाटन के समय स्व. प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी जी के कर कमलों द्वारा मध्य प्रदेश शासन का प्रथम शिखर सम्मान मिला।

पं. रामलाल

गुरु पं. रामलाल जी स्व. पं. कार्तिकराम जी के ज्येष्ठ पुत्र। आपका जन्म 6 मार्च, 1936 को हुआ। पं. रामलाल जी का जन्म उस समय हुआ जब रायगढ़ दरबार का कत्थक अपने उभार पर था। और कार्तिक - कल्याण की जोड़ी पूरे देश में धूम मचा रही थी।

संगीत परिवार में जन्में रामलाल जी की कत्थक नृत्य शिक्षा का कार्य चार वर्ष की अल्पायु में अपने पिता के सान्निध्य में आरंभ हुआ। दस वर्ष की अल्पायु में ही रायगढ़ दरबार में कला मर्मज्ञों के सम्मुख रामलाल का नृत्य प्रदर्शन हुआ जिसे देखकर महाराजा चक्रधर सिंह बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने जयपुर के गुरु पं. जयलाल महाराज से नृत्य शिक्षा की व्यवस्था कर दी। राजा चक्रधर सिंह भी पं. रामलाल को नृत्य की शिक्षा देने लगे। पं. रामलाल को नृत्य के अतिरिक्त तबला वादन तथा गायन में भी समान अधिकार था। तबले की शिक्षा रामलाल जी ने अपने पिता कार्तिकराम जी से तथा गायन की शिक्षा उस्ताद हाजी मुहम्मद खां, बांदा वाले से प्राप्त की।

पं. रामलाल सन 1949 में पहली बार मंच पर आए, जहां से आपको ख्याति मिलना आरंभ हुआ। सन् 1950 में बुलंद शहर संगीत सम्मेलन में, 1962 में इटावा के संगीत सम्मेलन में तथा पूरे भारत में सफल नृत्य प्रदर्शन कर आपने ख्याति अर्जित की।

राजा चक्रधर सिंह रामलाल जी को बहुत प्यार करते थे। प्यार से रामलाल को बाबू कहते थे। रियाज के समय बादाम दूध का इंतजाम राजा ने किया था। राजा चक्रधर सिंह कभी-कभी जंगल में शिकार करने जाते थे तब छोटे रामलाल को भी साथ ले जाते थे। वहां समय मिलने पर कभीकभार खुद रामलाल को रियाज करवाते थे।

महाराजा चक्रधर सिंह के बाद उनके पुत्र राजा ललित सिंह गद्दी पर बैठे। उन्होंने कार्तिकराम एवं उनके पुत्र रामलाल को राजा चक्रधर सिंह जैसा प्यार देकर अपने पास रखा। लेकिन आजादी के बाद सीमित व्यवस्थाओं के कारन राजा ललित सिंह की आर्थिक स्थिति कमजोर-सी हो गई। इसी कारण राजा कलाकारों को उचित सम्मान नहीं दे पाते। इसलिए रायगढ़ में कलाकारों का आना-जाना बंद हो गया।

रामलाल सन् 1956 से 1980 तक रायगढ़ में शासकीय सेवा पंचायत विभाग में कार्यरत रहे, इसी दौरान रायगढ़ में चक्रधर संगीत विद्यालय की स्थापना कर गायन, वादन तथा नृत्य की शिक्षा देते रहे। सन 1981 में मध्यप्रदेश शासन संस्कृति विभाग ने उस्ताद अलाउद्दीन खां संगीत अकादमी के अंतर्गत भोपाल में राजा चक्रधर नृत्य केंद्र की स्थापना की। जहां शासन के अनुरोध पर रायगढ़ घराने की कत्थक नृत्य की शिक्षा देने पं. कार्तिकराम जी को गुरु तथा पं. रामलाल को सहायक गुरु के पद पर बुलाया गया। स्व. राजा चक्रधर सिंह जी का नाम देश के संगीत जगत में चलता रहे, इसी भावना से चक्रधर नृत्य केंद्र में चार साल नर्तक एवं नृत्यांगनाएं तैयार करने में दोनों नि:स्वार्थ भाव से जुड़े रहे।

पं. रामलाल जी सन् 1990 से 1992 तक इंदिरा संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ में नृत्य रीडर के पद पर रहे। आपने अपनी परम्परा को आगे बढ़ाने में अपने पुत्र भूपेंद्र कुमार तथा प्रदीप कुमार और पुत्रियां मीन सोन, ईश्वरी, रेखा को भी कत्थक नृत्य की विधिवत शिक्षा दी। कला जगत में आपके अमूल्य योगदान के लिए आपको अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया गया। पं. रामलाल जी को 1995 में संगीत नाटक अकादमी अवॉर्ड, 2002 में मध्य प्रदेश शासन द्वारा शिखर सम्मान से और 2006 में छत्तीसगढ़ शासन द्वारा चक्रधर सम्मान से सम्मानित किया गया है। अभी वर्तमान में आप संगीत नाटक अकादमी एवं कत्थक केंद्र, दिल्ली के कार्यकारिणी सदस्य है। पं. रामलाल जी आज बिलासपुर (छत्तीसगढ़) में रहकर कत्थक नृत्य की सेवा करके रायगढ़ घराने का प्रचार एवं प्रसार कर रहे हैं।

गुरु पं. रामलाल जी द्वारा प्राप्त महाराजा चक्रधर सिंह जी लिखित बंदिशें :

१) कल्लोलनी :

क्रधा तिट घेघे तिट घिन्न धाधातिट,
धा धे धे तिट क्रधा तिट
धिट धिट धिट, कतिट धिता धुमकिट तक
धात्रक घेतिरकिट धिरकिट कतिट धा
धा त्रक घेतिरकिट धिरकिट कतिट धा
धा त्रक घे तिरकिट धिरकिट कतिट धा।

२) परन ब्रजनाछंद :

धा दींगड़ धा धींगड़ धा धा तकिट तक, किट तक थुन तक देत, धकिट तक धुम किट तक – धा दींग धा धा दिंगड़ धा दिं।
धा धा दींगड़ किड़नग तिरकिट गदिगन धा
धा धा दिंगड़ किड़नग तिरकिट गदिगन धा
धा धा दिंगड़ किड़नगं तिरकिट गदिगन धा।

3) दल बादल : (तीन ताल – मध्य लय)

नगन धेत–तधे तड़न्न धा धा, किड् धे–धे–धे, धड़न्न धिट धिट धगन क–त, धगन क–त,
तिट तिट घिट धिट – तड़न्न तकिट तक – दिगगिन्नाड़ धित
तगन्न धा
ताधा, तिटकता घेतिट तगन तागे तिट गदिन तान धा
ताधा, तिटकता घेतिट तगन तागे तिट गदिन तान धा
ताधा, तिटकता घेतिट तगन तागे तिट गदिन तान धा (धेत धेत दिगन्नाड़ धिट)

– डॉ. पं. नंदकिशोर कपोते
पुणे
मो.: 9371099911

समकक्षता स्थगिती

भारतीय संगीत प्रसारक मंडल, पुणे इस संस्था की परीक्षाओं को मंडलद्वारा दी गई समकक्षता तुरन्त प्रभावसे स्थगित रखी गई हैं, इसकी सर्व शिक्षक, परीक्षार्थी, परीक्षा केन्द्र, परीक्षक आदि नोंद लें।